अंक 30

धार्मिक बाल त्रैमासिक पत्रिका

चहकती चेतना

वर्ष-8वां

संपादक - विराग शास्त्री, जबलपुर

प्रकाशक - सूरज बेन अमुलखराय सेठ स्मृति ट्रस्ट, मुंबई
संस्थापक - आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाउन्डेशन, जबलपुर (म.प्र.)

आध्यात्मिक, तात्विक,धार्मिक एवं नैतिक

बाल त्रैमासिक पत्रिका

चहकती चेतना

प्रकाशक

श्रीमति सूरजबेन अमुलखराय सेठ स्मृति ट्रस्ट, मुम्बई

संस्थापक

आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाऊन्डेशन, जबलपुर म.प्र.

संपादक

विराग शास्त्री, जबलपुर

प्रबंध संपादक

स्वस्ति विराग जैन, जबलपुर

डिजाइन/ ग्राफिक्स

गुरूदेव ग्राफिक्स, जबलपुर

परमसंरक्षक

श्री अनंतराय ए.सेठ, मुम्बई

श्री प्रेमचंदजी बजाज, कोटा

संरक्षक

श्री आलोक जैन, कानपुर

श्री सुनीलभाई. जे. शाह, भायंदर, मुम्बई

मुद्रण व्यवस्था

स्वस्ति कम्प्यूटर्स, जबलपुर

प्रकाशकीय व संपादकीय कार्यालय

''चहकती चेतना''

सर्वोदय, 702, जैन टेलीकॉम,

फूटाताल, लाल स्कूल के पास, जबलपुर म.प्र. 482002

9300642434, 09373294684

chehaktichetna@yahoo.com

क्र.	विषय	पेज
1.	संपादकीय	1
2.	हमारे तीर्थक्षेत्र	2
3.	विराधना का फल	3
4.	केडबरी में इल्ली	4
5.	वज्रबाहु का वैराग्य	5
6.	अनुमोदना का फल	6
7.	कवितायें	7
8.	मुलाकात	8
9.	वह स्थान कौन सा है	9
10.	गोम्मटेश गाथा	10-11
11.	प्रेरक प्रसंग	12
12.	जैन धर्म की प्राचीनता	13-14
13.	टी.वी. का दुष्परिणाम	15
14.	प्रेरक प्रसंग	16
15.	तीर्थंकर ऊँचाई का फार्मूला	17
16.	अपशकुन	18-19
17.	प्रश्न उत्तर	20
18.	शील की रक्षा	21
19.	दिमागी कसरत	22
20.	काश क्षमा कर दिया होता	23
21.	तोते ने किया कमाल	24
22.	आश्चर्य किंतु सत्य	25-26
23.	समाचार कोना	27-28
24.	मुनिराजों के मूल गुण	29-30
25.	कॉमिक्स	31-32

सदस्यता शुल्क - 400 रू. (तीन वर्ष हेतु)

1200 रू. (दस वर्ष हेतु)

चहकती चेतना के पूर्व प्रकाशित संपूर्ण अंक प्राप्त करने के लिये लॉग ऑन करें

www.vitragvani.com

सदस्यता राशि अथवा सहयोग राशि आप ''चहकती चेतना'' के नाम से ड्राफ्ट/चैक/मनीआर्डर से भेज सकते हैं। आप यह राशि कोर बैंकिंग से ''चहकती चेतना'' के बचत खाते में जमा करके हमें सूचित सकते हैं।

पंजाब नेशनल बैंक,फुहारा चौक, जबलपुर

बचत खाता क्र.- 1937000101030106

IFS CODE : PUBN0193700

त्रैमासिक धार्मिक पत्रिका
चहकती चेतना
APRIL-JUNE 2014

संपादकीय

जय जिनेन्द्र बच्चो। आपके स्कूलों की अब छुट्टियाँ हो गईं होगीं और आप निश्चिंत होकर खेलकूद या समर क्लासेस में व्यस्त होंगे और रिजल्ट की प्रतीक्षा कर रहे होंगे । बच्चो ! आजकल स्कूल की पढ़ाई का इतना बोझ होता है कि आपको अपने प्यारे जैन धर्म की महान बातें जानने का समय ही नहीं मिलता और न ही आपके मम्मी-पापा को धर्म के बारे में आपसे बात करने का समय नहीं है । पर हम सबको महान पुण्य से यह महान जैन धर्म मिला है, इसे जानना और समझना हमारा कर्तव्य है । जैनधर्म के सिद्धान्तों को समझने से हमारा जीवन ही सुखी होगा। इसलिये खेलकूद के साथ प्रतिदिन कुछ समय जैन धर्म को जानने में लगाना । जिनमंदिर भी प्रतिदिन जाना और यदि आपको किसी बाल संस्कार शिविर में जाने का अवसर मिले तो चूकना मत । आपका जीवन जैन धर्म के प्रताप से मंगलमय हो- ऐसी भावना के साथ आपका ही - विराग

भगवान महावीर के जन्मोत्सव की शुभकामनायें

जुबान का वजन बहुत कम होता है, लेकिन इसे बहुत कम लोग संभाल पाते हैं।

त्रैमासिक धार्मिक पत्रिका

चहकती चेतना

APRIL-JUNE 2014

हमारे तीर्थ क्षेत्र

महाराष्ट्र प्रान्त के परभणी जिले से 42 किमी
की दूरी स्थित है तीर्थ क्षेत्र जिन्तूर। प्राचीन समय में इस
नगर के सारे निवासी जैन थे और इस नगर में 14
दिगम्बर जिनमंदिर थे। जैन नगरी होने के कारण इसे
जिनपुर कहा जाता था। बाद में इसका नाम जिन्तूर हो
गया । प्राप्त इतिहास के अनुसार यहाँ का राजा
यमराज-नेमिराज भी जैन था । नगर में प्रतिदिन
जिनेन्द्र दर्शन - पूजन के बाद ही नगर के कार्य प्रारंभ
किये जाते थे।

मुगल शासकों के अनेक आक्रमणों के कारण
यहाँ के 10 जिनमंदिर और हजारों प्रतिमायें नष्ट हो
गईं। पूर्वजों ने जान की बाजी लगाकर कुछ प्रतिमाओं
की सुरक्षा की । ये प्रतिमायें नगर के जिनमंदिर में
विराजमान हैं। 450 वर्ष पूर्व श्री वीर संघवी इस नगर में
आये तो उन्हें रात्रि में स्वप्न आया कि जिन्तूर से उत्तर
दिशा की दिशा पहाड़ी के नीचे एक विशाल जिनमंदिर
है। सुबह होने पर स्वयं अपने पुत्रों के साथ जाकर खुदाई
करने लगे और 17 फुट नीचे खुदाई करने पर उन्हें सात
गुफायें मिलीं। इन गुफाओं में अनेक प्रतिमाओं के साथ
मूल नायक के रूप में भगवान पार्श्वनाथ की छः फुट
ऊँची प्रतिमा विराजमान है। यह प्रतिमा अधर अंतरिक्ष में
है, पीछे किसी प्रकार का सहारा नहीं है, इस प्रतिमा के
नीचे से पेपर निकाला जा सकता है। इस क्षेत्र पर चतुर्थ
कालीन मुनिराजों की चरण पादुकायें विराजमान हैं।
इस क्षेत्र की वंदना अवश्य करना चाहिये।

संपर्क सूत्र - 02457-220113,9766412500

www.nemgiri.org

जो ज्यादा बोलता है, वह बहुतसी मूर्खतापूर्ण बातें करता है।

देखो ! देखो !
जीव की विराधना का फल

इस जीव ने अनंत बार अपनी पवित्र आत्मा का अपमान किया है और संसार के विषय-भोगों को पाने के लिये पापों को करता रहा है परन्तु अपने कर्मों का पल जीव को स्वयं भोगना पड़ता है। इन दु:खी जीवों को देखिये और पापों से सावधान होकर जिनधर्म की शरण में आईये -

1 एक विशेष तरह की बीमारी से पीड़ित इस व्यक्ति का चेहरा देखिये आप स्वयं इसके दु:ख को समझ जायेंगे।

2

भारत में ही रहने वाले इन दो जुड़वां भाईयों को देखिये। इनका ऑपरेशन होना संभव नहीं है क्योंकि शरीर एक है और आत्मा दो।

जो अपने आत्मा को नहीं देखता वह अंधा है।

त्रैमासिक धार्मिक पत्रिका

चहकती चेतना

कैडबरी में इल्ली और कॉकरोच

बच्चो ! आप जिस कैडबरी को बड़े शौक से खाते हैं ना। उसी कंपनी की डेरी मिल्क चॉकलेट में जिन्दा इल्ली और मरा हुआ कॉकरोच निकला। चॉकलेट में से जीवित इल्ली निकलने का वीडियो हमारे पास उपलब्ध है। तो क्या आप अब खायेंगे .... इस मांसाहारी चॉकलेट्स को....

अपना प्यारा आत्मा, है अनन्त वेदान्त ।
जन्म मरण का अन्त कर, होना सिद्ध भगवन्त ॥
वेदान्तराज जैन, मिर्जापुर 26 जनवरी 2014

मानवी प्यारी सी गुड़िया हो, कविता करो महान।
खिले धर्म अरविन्द अब, पाओ शिवपुर धाम ॥
मानवी अरविन्द जैन, जबलपुर 30 मई 2014

सब जीवों से मैत्री हो, सब पर रहे प्रमोद ।
यही भावना जन्मदिवस पर, करना आतम बोध
मैत्री दीपक जैन, बिजनौर 10 अप्रैल 2014

मैत्री के दादा श्री प्रमोद जैन की ओर से 500/- प्राप्त।

पाप परिणाम बिना पाप का उदय भी दुःखी करने में समर्थ नहीं है।

त्रैमासिक धार्मिक पत्रिका
चहकती चेतना
APRIL-JUNE 2014

वज्रबाहु को वैराग्य

मल्लिनाथ भगवान के मोक्ष जाने के पश्चात् अयोध्या नगरी में एक सुरेन्द्रबन्धु नाम का राजा हुआ। उसके दो पुत्र थे – वज्रबाहु और पुरन्दर। समयानुसार दोनों का विवाह हो गया। वज्रबाहु को अपनी पत्नी मनोदया से अत्यन्त प्रेम था। जब मनोदया का भाई उदयसुन्दर उसे लेने आया तो वज्रबाहु भी ससुराल साथ जाने तैयार हो गया। रास्ते के एक वन में वज्रबाहु ने एक दिगम्बर मुनिराज के दर्शन किये और परम वीतरागी मुनिराज की सौम्य मुद्रा देखकर वह विचार करने लगा – अहो ! कैसी अद्भुत शान्त मुद्रा है, इनको देखने मात्र से परम शांति का अनुभव हो रहा है। सच .... यही है मनुष्य जीवन की सार्थकता और एक ओर मैं हूँ जो पापों में रम रहा हूँ। यदि मैं भी निर्ग्रन्थ जीवन ग्रहण करूँ तो मेरा जीवन सफल हो जायेगा।

वज्रबाहु को मुनिराज की ओर स्थिर देखकर उनके साले उदयकुमार ने मजाक करते हुये कहा – हे बन्धु ! आप मुनिराज को निश्चल होकर देख रहे हैं तो क्या दिगम्बर मुनिव्रत ग्रहण करना है ?

वज्रबाहु ने जबाब दिया – हे भ्राता! तुमने मेरे मन की बात कह दी है। उदयकुमार को वज्रबाहु का पत्नी प्रेम पता था। उसने फिर मजाक करते हुये कहा – यदि आप दीक्षा लेंगे तो मैं भी आपके साथ मुनि बन जाउंगा। पर आपको तो संसार ही पंसद है। वज्रबाहु बोला – ये लो, मैं चला मुनि बनने। इतना कहकर वह हाथी से उतर गया और अपने सारे वस्त्र आभूषण उतार दिये। यह देखकर मनोदया रोने लगी। उदयकुमार भी आश्चर्यचकित रह गया। वह बोला–भाई! मैं तो मजाक कर रहा था, आप तो बुरा मान गय

वज्रबाहु ने कहा – नहीं भ्राता ! आपने तो मुझ पर उपकार किया है। तुम ही मेरे सच्चे मित्र हो जो तुमने संसार मुक्ति की प्रेरणा दी। मैं तो अब जिनदीक्षा लूंगा। तुम्हारी जैसी इच्छा हो वह तुम करो। ऐसा कहकर पूरे परिवार से क्षमा मांगकर आचार्य गुणसागर के पास जाकर मुनिदीक्षा ले ली।

यह देखकर रानी मनोदया ने भी आर्यिका दीक्षा ले ली, साले उदयसुन्दर और उसकी 26 रानियों ने भी दीक्षा ले ली। राजसभा में बैठे वज्रबाहु के दादा को मालूम हुआ कि राजकुमार वज्रबाहु ने जिनदीक्षा ले ली है तो वे विचार करने लगे। अरे ! मेरे पौत्र ने युवा अवस्था में ही संसार – भोगों से उदास होकर दीक्षा ले ली और मैं वृद्ध होकर भी राजपाट में उलझा हूँ। इस प्रकार छोटे पौत्र पुरन्दर को राज्य देकर अपने पुत्र सुरेन्द्रबन्धु के साथ आचार्य निर्वाणघोष स्वामी के पास जाकर जिनदीक्षा ले ली। धन्य है वज्रबाहु कुमार के वैराग्य की।

जुबान का वजन बहुत कम होता है, लेकिन इसे बहुत कम लोग संभाल पाते हैं।

त्रैमासिक धार्मिक पत्रिका
चहकती चेतना
APRIL-JUNE 2014

अनुमोदना का फल

राजा वज्रजंघ और रानी श्रीमति भोजन करने की तैयारी कर रहे थे कि इतने में अचानक आकाश से दो आकाश विहारी मुनिराज दमधर और मुनि सागरसेन वहाँ पधारे। उन दोनों मुनिराजों को देखकर राजा वज्रजंघ अत्यंत प्रसन्न हो गये और विचार करने लगे – आज का यह दिन धन्य हो गया और मेरे भी महासौभाग्य हैं कि आज परम पावन वीतरागी मुनिराजों के दर्शन प्राप्त हो रहे हैं। उन मुनिराजों के वन में ही आहार लेने की प्रतिज्ञा थी। सेवकों से राजा को ज्ञात हआ कि दोनों मुनिराज वन में विराजमान हुये हैं। राजा ने आहार आदि की समुचित व्यवस्था कर मुनिराजों को आहार हेतु पड़गाहन किया। अत्यन्त तेजस्वी और पवित्र मुनिराजों को देखकर ऐसा लग रहा था कि मानों मोक्ष धरती पर उतरकर आ गया हो। इसी समय इन मुनिराजों को वन के सिंह, बन्दर, शूकर और नेवला भी अत्यंत भक्ति से देखकर प्रसन्न हो रहे थे।

राजा वज्रजंघ ने मुनिराजों को विधि अनुसार आहार कराया। उन चारों जानवरों ने भी आहारदान की अनुमोदना की। आहार के पश्चात् पाँच आश्चर्यकारी घटनायें हुईं – 1. आकाश से रत्नों की वर्षा 2. पुष्पों की वर्षा 3. सुगन्ध की वर्षा 4. मंगल ध्वनि का अपने आप होना 5. आकाश में देवों के स्वर गूंजना – अहो दानं महादानं।

आहार के बाद के दासी के पूछने पर मुनिराज ने बताया कि ये चारों पशु राजा वज्रजंघ के पूर्व भव के साथी हैं और आगामी भव में राजा के पुत्र होकर तुम्हारे साथ ही मोक्ष प्राप्त करेंगे इतना कहकर मुनिराज विहार कर गये। बाद में इन्हीं चारों जानवरों ने आहार दान की अनुमोदना के फल में राजा वज्रजंघ के आठवें भव ऋषभदेव तीर्थंकर के साथ मोक्ष प्राप्त किया। राजा वज्रजंघ की पत्नी श्रीमति ने भी इसी भव में राजा श्रेयांस के रूप में जन्म लिया और इसी भव से मुक्ति प्राप्त की।

अपना आत्मा सबसे प्यारा

एक था चेतन गतियाँ चार ,
दु:ख का देखा कभी न पार ।
नरक गति से तिर्यन्च में आये,
नर सुर गति में भी दु:ख पाये ।।
चारों गति से थककर आये,
जिनवाणी के वचन सुहाये ।
हमने देखा है जग सारा,
अपना आत्मा सबसे प्यारा ।।

मौत के बाद कौन कितने देर तक जीवित रहता है -

हृदय - 10 मिनिट
मस्तिष्क - 20 मिनिट
आँखें - 4 घंटे
त्वचा - 5 दिन
हड्डियाँ - 30 दिन
और कर्म हजारों वर्षों तक

बाल संकल्प

हम बहादुर वीर बनेंगे, भूत प्रेत से नहीं डरेंगे ।
माता-पिता की सेवा करेंगे, गुरु की आज्ञा शीश धरेंगे ।।
प्राण किसी के नहीं हरेंगे, सब जीवों पर दया करेंगे ।
झूठ वचन हम नहीं कहेंगे, सत्य धर्म पर डटे रहेंगे ।।
गाली कभी नहीं हम देंगे, बिना दिये कोई चीज न लेंगे ।
चुगली हम तो नहीं करेंगे, खोटी संगति नहीं करेंगे ।।
कभी किसी से नहीं लड़ेंगे, बड़े जनों की विनय करेंगे ।
मिथ्या दर्शन नाश करेंगे, इक दिन हम भगवान बनेंगे ।।

हम समझते कम और समझाते ज्यादा हैं इसलिये सुलझते कम, उलझते ज्यादा हैं।

मुलाकात

एक आदमी जंगल के रास्ते से जा रहा था। उसे चार स्त्रियाँ मिलीं। उसने पहली से पूछा -

बहन! तुम्हारा नाम क्या है ? उसने कहा - बुद्धि। तुम कहाँ रहती हो मनुष्य के दिमाग में। दूसरी स्त्री से पूछा - बहन! तुम्हारा नाम क्या है ? लज्जा! तुम कहाँ रहती हो ? आंख में। तीसरी स्त्री से पूछा -तुम्हारा नाम क्या है ? हिम्मत। तुम कहाँ रहती हो ? दिल में। चौथी स्त्री से पूछा - तुम्हारा नाम क्या है ? तंदुरुस्ती। वह आदमी थोड़ा आगे बढ़ा उसे चार पुरुष मिले। उसने पहले पुरुष से पूछा - तुम्हारा नाम क्या है ? उसने जबाब दिया - क्रोध। कहाँ रहते हो ? दिमाग में। परन्तु दिमाग में तो बुद्धि रहती है तुम कैसे रहते हो

जब मैं वहाँ रहता हूँ तो बुद्धि वहाँ से विदा हो जाती है। दूसरे से पूछा - तुम्हारा नाम क्या है और तुम कहाँ रहते हो ? मेरा नाम लोभ है और मैं आंख में रहता हूँ। आंख में तो लज्जा रहती है तुम कैसे रहते हो जब में वहाँ जाता हूँ तो लज्जा वहाँ से चली जाती है।

तीसरे से पूछा - तुम्हारा नाम क्या और तुम कहाँ रहते हो जबाब मिला - भय और मैं दिल में रहता हूँ। परन्तु दिल में तो हिम्मत रहती है.... जब मैं आता हूँ तो हिम्मत भाग जाती है। चौथे से पूछा - तुम्हारा नाम क्या और तुम कहाँ रहते हो ? उत्तर मिला रोग और मैं पेट में रहता हूँ। पर पेट में तो तन्दुरुस्ती रहती है .... जब तुम मानव विवेक शून्य होकर स्वास्थ्य के प्रतिकूल सामान खाते हो, भूख से अधिक खाते हो तो तंदुरुस्ती भाग जाती है और मेरा साम्राज्य हो जाता है।

वह स्थान कौन सा है ......

प्रश्न 1. वह स्थान कौनसा है जहाँ तीन गति के जीव एक साथ देखे जा सकते हैं ?

उत्तर – समवशरण।

प्रश्न 2. वह कौन सा स्थान है जहाँ 108 मुनिराजों की स्मृति में 108 जिनमंदिर बनाये गये जो मुनि राजा से भूलवश जलकर भस्म हो गये थे ?

उत्तर – बेलगाम कर्नाटक।

प्रश्न 3. वह कौन सा स्थान है जहाँ राम के छोटे भाई शत्रुघ्न ने जिनमंदिर बनवाये थे ?

उत्तर – मथुरा उत्तरप्रदेश।

प्रश्न 4. वह कौन सा स्थान है जहाँ आचार्य समन्तभद्र ने स्वयं भू स्तोत्र की रचना की ?

उत्तर – कांची बनारस ।

प्रश्न 5. वह कौन सा स्थान है जहाँ सोमा सती के नाग का हार बनने की घटना हुई थी ?

उत्तर – चम्पापुर।

प्रश्न 6. वह कौन सा स्थान है जहाँ से लक्ष्मण का जीव भविष्य में मोक्ष जायेगा ?

उत्तर – धातकीखण्ड।

प्रश्न –7. वह कौन सा स्थान है जहाँ जीवों को मात्र कर्म का आहार होता है ?

उत्तर – नरक एवं निगोद।

प्रश्न 8. वह कौन सा स्थान है जहाँ 1500 कलाकारों एवं 1200 मजदूरों ने 14 वर्षों में एक भव्य जिनमंदिर तैयार किया ?

उत्तर – दिलवाड़ा आबू पर्वत से 3 किमी।

प्रश्न 9. वह कौन सा स्थान है जहाँ एक भी द्रव्य नहीं है ?

उत्तर – ऐसा स्थान कहीं नहीं है।

प्रश्न 10. वह कौन सा स्थान है जहाँ से सात बलभद्र मोक्ष पधारे ?

उत्तर – गजपंथा जि. नासिक महाराष्ट्र।

जो ज्यादा बोलता है, वह बहुतसी मूर्खतापूर्ण बातें करता है।

गोम्टेश गाथा

कर्नाटक के गंग वंश के नरेश महाराजा चामुण्डराय की माता काल्ला देवी अत्यंत धर्म रुचिवंत महिला थीं। वे देव-शास्त्र-गुरु की भक्ति में लीन रहते हुये आचार्य नेमिचन्द्र सिद्धान्त चक्रवर्ती से निरंतर ज्ञान प्राप्त करती थीं। उन्होंने अनेक बार मुनिराजों के मुख से भगवान बाहुबली की महिमा सुनी थी, उनकी तीव्र इच्छा थी कि पोदनपुर के भगवान भगवान बाहुबली की प्रतिमा के दर्शन करना चाहिये। माता की आज्ञा सुनकर चामुण्डराय अपनी माता को साथ लेकर पोदनपुर की ओर चल पड़े। यात्रा करते हुये संघ चन्द्रगिरि पर्वत तक पहुँचा, सभी विश्राम हेतु वहीं ठहर गये। रात्रि को माता काल्ला को, राजा चामुण्डराय को और आचार्य नेमिचन्द्र जी को एक साथ, एक जैसा ही स्वप्न आया। स्वप्न में एक देवी ने प्रकट होकर कहा - 'इतनी लम्बी यात्रा व्यर्थ है, क्योंकि पोदनपुर की वह प्रतिमा अब विनष्ट हो गई है। चामुण्डराय यह स्वप्न देखकर दु:खी हो गये। दूसरी रात को उन्हें फिर स्वप्न में देवी प्रकट हुई और कहा कि प्रात:काल पूजन के बाद एक सोने का बाण विन्ध्यगिरि पर्वत की ओर छोड़ना। जिस शिला पर तीर गिरेगा उसी शिला से तुम्हारे इष्ट भगवान बाहुबली की प्रतिमा आकार लेगी। प्रात:काल चामुण्डराय ने ऐसा ही किया और बाण लगते ही पर्वत खण्ड गिरने लगे और एक चट्टान में मूर्ति का ऊपर का भाग दिखाई देने लगा। चामुण्डराय ने आगे की यात्रा स्थगित कर दी और वहीं पर मूर्ति निर्माण का संकल्प लिया।

मूर्ति निर्माण के लिये राज्य के सर्वश्रेष्ठ मूर्तिकार अरिष्ट नेमि को बुलाया गया। अरिष्ट नेमि ने उस विशाल चट्टान को चारों ओर से देखा और उसकी आंखों में अत्यन्त सुन्दर प्रतिमा का आकार ले लिया। चामुण्डराय की आज्ञा पाकर अरिष्टनेमि ने अपने सहयोगियों के साथ प्रतिमा निर्माण का कार्य प्रारंभ कर दिया। कुछ दिन बाद चट्टान पर एक विशाल प्रतिमा का आकार उभरने लगा। उसने सोचा कि अब अपने पारिश्रमिक की बात कर लेनी चाहिये। उसने संकोच त्यागकर चामुण्डराय से कहा कि महाराज! मुझे इस प्रतिमा निर्माण का कितना पारिश्रमिक मिलेगा? चामुण्डराय ने कहा - कलाकार! यह तो आप स्वयं निश्चित करें, आप जो पारिश्रमिक कहेंगे मैं उसे सहर्ष प्रदान करूँगा। यह सुनकर अरिष्टनेमि ने कहा -

महाराज मूर्ति निर्माण के समय में चट्टान से जितना अतिरिक्त पत्थर निकलता जाये उतने भार की स्वर्ण मुद्रायें मुझे मिलनी चाहिये। चामुण्डराय कहा- हमें स्वीकार है।

मूर्तिकार के रात-दिन कठोर परिश्रम से मूर्ति के बाल, चेहरा, भुजायें, पैर दिखाई देने लगे। टूटे पत्थरों के बराबर अनेक गाड़ियों में स्वर्ण मुद्रायें लेकर वह मूर्तिकार अवकाश लेकर अपने घर पहुँचा और अपनी माँ के सामने स्वर्ण मुद्राओं का ढ़ेर लगा दिया। माँ ने आश्चर्य से पूछा कि पुत्र! यह क्या है? मूर्तिकार अरिष्टनेमि ने कहा - माँ! यह मूर्ति निर्माण का पारिश्रमिक है। माता ने तुरन्त कहा - धिक्कार है तुझे! जो इतना महान कार्य करके पारिश्रमिक लेकर आया है। एक माँ वह है जिसकी आज्ञा से उसका पुत्र इतनी बड़ी राशि धर्म कार्य में खर्च कर रहा है और एक मेरा पुत्र है जो इसी महान कार्य में धन की इच्छा रखता है। माँ ने पूरी स्वर्ण मुद्रायें गांव के प्रधान को दान कर दीं और इस धन से जिनमंदिर, औषधालय, धर्मशाला निर्माण करने का निवेदन किया। माँ के धर्म प्रेम और प्रभावशाली वचनों ने अरिष्ट नेमि को बदल दिया और उसने प्रतिज्ञा की अब वह शेष मूर्ति निर्माण का कार्य धर्म भाव से करेगा। वह विन्ध्यगिरि पर्वत पर वापस आ गया और कई वर्षों के कठिन परिश्रम के बाद मूर्ति सम्पूर्ण रूप से निर्मित हो गई। उसने चामुण्डराय ने निवेदन किया कि आप मूर्ति का निरीक्षण कर लें। चामुण्डराय ने पूरी प्रतिमा का निरीक्षण किया उन्हें कोई कमी नही दिखी। उन्होंने मूर्तिकार से कहा - कलाकार! तुम्हीं अपनी बुद्धि से मूर्ति को थोड़ा और घिसने का प्रयास करो, अब जितनी पत्थर की धूल निकलेगी मैं उसके भार के बराबर रत्न दूंगा। मूर्तिकार ने पुन: प्रयास किया और मूर्ति को और घिसा। जितनी पत्थर की धूल निकली, मूर्तिकार को उतने वजन के रत्न दे दिये गये। चामुण्डराय को अब प्रतिमा अत्यंत सुन्दर लग रही थी फिर भी उन्होंने मूर्तिकार से कहा - हे कलाकार! तुमने अपनी पूरी प्रतिभा से इस भव्य विशाल मूर्ति का निर्माण किया है, तुम प्रतिमा की और अधिक सुन्दरता के लिये अंतिम प्रयास करो, अब प्रतिमा के घिसने से जो धूल निकलेगी, मैं उसके वजन से दस गुना मणियाँ तुम्हें प्रदान करुँगा। मूर्तिकार ने ऐसा ही किया। चामुण्डराय बोले - अब सौ गुना मणियाँ दूँगा...। मूर्तिकार ने हाथ जोड़कर कहा - महाराज! अब आप मुझे सम्पूर्ण राज्य भी दें तो मैं छैनी-हथौड़ा नहीं उठाऊँगा।

महामात्य चामुण्डराय प्रसन्न हो गये। चामुण्डराय ने कलाकार अरिष्टनेमि का प्रजा के सामने सम्मान किया और एक सोने की छैनी-हथौड़ी अरिष्टनेमि के घर के द्वार पर लगाई गई।

ऐसे थे वीर चामुण्डराय और उनकी माता और धन्य वह कलाकार अरिष्टनेमि।

जो अपने मुख से धर्म चर्चा नहीं करता वो गूंगा है।

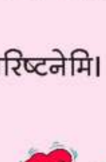

अमर बलिदान

जयपुर के महाराज ने सुना कि आज जनता ने क्रोध में एक अंग्रेज अधिकारी की परिवार सहित हत्या कर दी है। राजा ने सोचा कि अंग्रेज अधिकारी की हत्या का बदला अंग्रेज सरकार अवश्य लेगी और हो सकता है कि इसका भयंकर दण्ड प्रजा को भुगतना पड़े। यह सोचकर राजा ने समस्त अपराधियों को मृत्यु दण्ड देने का आदेश दिया। जिन सैकड़ों व्यक्तियों को अंग्रेज अधिकारी की हत्या के अपराध में पकड़ा गया उनमें से बहुत से निर्दोष नागरिक भी थे। उस समय राज्य के दीवान अमरचंदजी (शेर को जलेबी खिलाने वाले) थे। उन्होंने सोचा कि आज सैकड़ों लोगों को मृत्यु दण्ड दिया जायेगा। इन्हें बचाया जा सकता है। यह सोचकर वे महाराज से बोले - महाराज ! उस अंग्रेज अधिकारी की हत्या मेरे कहने पर की गई है, इसमें इन लोगों का कोई दोष नहीं है। अत: आप दण्ड मुझे दें। यह सुनकर महाराज ने दीवान अमरचंदजी को फांसी की सजा का आदेश दिया और दीवानजी दूसरों की रक्षा के लिये हंसते-हंसते फांसी पर झूल गये।

पहले कौन सा काम

एक दिन भरत चक्रवर्ती को सेवकों से एक साथ तीन शुभ समाचार मिले। सेवक ने कहा - हे पृथ्वीनाथ! आपके नाथ पुत्ररत्न की प्राप्ति हुई है। दूसरे ने कहा - स्वामिन्! आयुधशाला में चक्ररत्न की उत्पत्ति हुई है, शीघ्र चक्ररत्न की पूजा कर आनन्द उत्सव की तैयारी की जाना चाहिये। तीसरे ने कहा - हे महाभाग्यवान ! त्रिलोकीनाथ भगवान आदिनाथ को केवलज्ञान की प्राप्ति हुई है।

तीनों सुखद समाचार सुनकर चक्रवर्ती ने सोचा कि सबसे पहले कौन सा उत्सव मनाया जाना चाहिये ? सोच विचारकर निर्णय किया कि सबसे पहले भगवान आदिनाथ के केवलज्ञान प्राप्ति का उत्सव मनाया जाये, बाद में दूसरे उत्सव मनाये जायें। एक मन्त्री ने कहा - स्वामी! जिस चक्ररत्न के कारण आपको पृथ्वी पर साम्राज्य का अधिकार मिला, आपने उस चक्ररत्न की प्राप्ति का उत्सव पहले क्यों नहीं मनाया ? चक्रवर्ती ने उत्तर दिया - ज्ञान लक्ष्मी के आगे चक्ररत्न की लक्ष्मी तुच्छ है और लौकिक लक्ष्मी तो पुण्य के प्रभाव से मिलती है, आत्मवैभव ही हमारा सच्चा वैभव है।

प्रश्न यह नहीं कि आप क्या थे, बल्कि यह है कि आज आप क्या हैं ?

जैन धर्म की प्राचीनता के बारे में हिन्दु ग्रन्थों के उल्लेख

1. शिवपुराण – 68 तीर्थों की यात्रा करने का जो फल होता है, उतना फल मात्र तीर्थंकर के स्मरण करने से होता है –

अष्टषष्ठिसु तीर्थेषु यात्रायां यत्फलं भवेत् ।
श्री आदिनाथ देवस्य स्मरणेनापि तद्भवेत् ।।

2. श्री महाभारत में कहा – युग-युग में द्धारिकापुरी महाक्षेत्र है, जिसमें हरि का अवतार हुआ है। जो प्रभास क्षेत्र में चंद्रमा की तरह सुशोभित है और गिरनार पर्वत पर नेमिनाथ और कैलाश पर्वत पर आदिनाथ हुये हैं। यह क्षेत्र ऋषियों का आश्रम होने से मुक्तिमार्ग का कारण है। यथा –

युगे-युगे महापुण्यं दृश्यते द्वारिकापुरी ।
अवतीर्णो हरिर्यत्र प्रभास शशि भूषण : ।।
रेवताद्रौ जिनो नेमिर्युगादि र्विमलाचले ।
ऋषीणामाश्रमादेव मुक्ति मार्गस्य कारणम् ।।

3. महाभारत में एक स्थान पर कहा – हे अर्जुन ! रथ पर सवार हो और गांडीव धनुष हाथ में ले, मैं जानता हूँ कि जिसके सन्मुख दिगम्बर मुनि आ रहे हैं उसकी जीत निश्चित है। यथा –

आरोहस्व रथं पाथ गांडीवं करे करु ।
निर्जिता मेदिनी मन्ये निर्ग्रन्था यदि सन्मुखे ।।

4. ऋग्वेद में कहा – तीन लोक में प्रतिष्ठित श्री ऋषभदेव से आदि लेकर श्री वर्द्धमान स्वामी तक चौबीस तीर्थंकर हैं। उन सिद्धों की शरण को प्राप्त होता हूँ। यथा

ॐ त्रैलोक्य प्रतिष्ठितानां चतुर्विंशति तीर्थंकराणां ।
ऋषभादि वर्द्धमानान्तानां सिद्धानां शरणं प्रपद्ये ।।

5. ऋग्वेद में कहा – मैं नग्न धीर वीर दिगम्बर ब्रम्हरूप सनातन अर्हन्त आदित्य वर्ण पुरुष की शरण को प्राप्त होता हूँ। यथा –

ॐ नग्नं सुधीरं दिग्वाससं ब्रम्हगर्भं सनातनं उपैमि वीरं ।
पुरुषमर्हन्तमादित्य वर्णं तसमः पुरस्तात् स्वाहा ।।

शब्द जितने कम हों, प्रार्थना उतनी अच्छी होती है।

6. यजुर्वेद में कहा है – अर्हन्त नाम वाले पूज्य ऋषभदेव को प्रणाम हो। यथा

ॐ नमोर्हन्तो ऋषभो।

7. दक्षिणामूर्ति सहस्रनाम ग्रन्थ में लिखा है – शिवजी बोले – जैन मार्ग में रति करने वाला जैनी क्रोध को जीतने वाला और रोगों को जीतने वाला है। यथा –

शिव उवाच। जैन मार्गरतो जैनो जितक्रोधो जितामयः।

8. नगर पुराण में कहा – सतयुग में दस ब्राम्हणों को भोजन देने से जो पल होता है वह ही पल कलियुग में अर्हन्त भक्त एक मुनि को भोजन देने से होता है। यथा

दशभिर्भोजितैर्विप्रैः यत्पलं जायते कृते।
मुनेरर्हत्सुभक्तस्य तत्पलं जायते कलौ।।

9. भागवत के पाँचवे स्कन्ध के अध्याय 2 से 6 तक ऋषभदेव का कथन है। जिसका भावार्थ यह है कि चौदह मनुओं में से पहले मनु स्वयं भू के पौत्र नाभि के पुत्र ऋषभदेव हुये, जो दिगम्बर जैन धर्म के आदि प्रचारक थे। ऐसे अनेक हिन्दु ग्रन्थों में जैन धर्म का उल्लेख आया है।

ऋषभ अवतार को ही नमस्कार क्यों

हिन्दु समाज के साधु शुक थे। वैदिक धर्म में कच्छ, मच्छ, राम, कृष्ण, ऋषभ आदि भगवान के 24 अवतार माने गये हैं। वे ऋषभ अवतार को ही नमस्कार करते थे, बाकी 23 को नहीं। उनसे इसका कारण पूछा गया तो उन्होंने कहा – भगवान ऋषभ ने ही निवृत्ति मार्ग का उपदेश दिया है। बाकी 23 ने दुष्टों को मारने आदि या अन्य भोग प्रधान कार्य किये हैं। इसलिये मैं ऋषभ अवतार को ही नमस्कार करता हूँ।

जिस खेत में अच्छे बीज नहीं डाले जाते, वहाँ कचरा अपने आप पैदा हो जाता है।

टी.वी. का दुष्परिणाम या अभिभावकों का अविवेक ?

जबलपुर की कॉलोनी में कुछ बच्चे खेल रहे थे। खेलते - खेलते एक बच्चे ने एक झाड़ू की सींक लकड़ी से धनुष बना लिया और झाड़ू की ही एक और लकड़ी को तीर बना लिया और वह टी.वी. सीरियल महाभारत की नकल करने लगा। खेलते हुये उसने एक 5 वर्षीय प्यारी सी बच्ची की ओर तीर किया और धनुष से उसकी ओर तीर छोड़ दिया। तीर सीधा उस बच्ची की आँख में जाकर लगा और आँख से खून की धारा बहने लगी। सब बच्चे शोर करने लगे, इन बच्चों का शोर सुनकर सभी के परिवार के सदस्य आ गये। बच्ची की आँख से खून निकलता देखकर सभी घबरा गये और उस बच्ची के माता-पिता तुरन्त उसे समीप के मेट्रो हॉस्पिटल ले गये। डॉक्टर तुरन्त इलाज प्रारंभ कर दिया और उसका खून बहना रुक गया। लेकिन उस प्यारी बच्ची की आँख की रोशनी हमेशा के लिये चली गई। डॉक्टर ने स्पष्ट रूप से कहा कि झाड़ू की लकड़ी ने उसके रेटिना को नष्ट कर दिया है और उसकी आँख की स्थिति इतनी खराब हो गई कि दुनिया में कहीं भी इसका इलाज संभव नहीं है।

इस सारी घटना में एक प्रश्न उपस्थित होता है कि गल्ती किसकी ? बच्ची की जिसे तीर लगा, उस बच्चे की जिसने तीर चलाया, माता-पिता की जिन्होंने ध्यान नहीं रखा कि हमारा बच्चा क्या और किसके साथ खेल रहा है ? या टी.वी. की जिसको देखकर उस बच्चे को तीर चलाने की प्रेरणा मिली। बच्चों से अधिक समझदारी की उम्मीद नहीं कर सकते। टी.वी.तो अजीव वस्तु है उसे दोष देने से भी क्या लाभ ? अब बात रही माता-पिता की तो सबसे अधिक जिम्मेदारी माता-पिता की है। तेजी से बदलते आज के दौर में हम परिस्थितियों को दोष देकर अपनी जिम्मेदारी से नहीं बच सकते। यह हमारी नैतिक जिम्मेदारी है कि हम बच्चों की टी.वी. देखने के समय की मर्यादा रखें, वे क्या कार्यक्रम देख रहे हैं इस पर नजर रखें, जब हम टी.वी. देखते हैं तो बच्चे भी हमारे साथ हमारी पसंद के कार्यक्रम देखते हैं तो उन पर उनका क्या असर होता होगा? बच्चे कार्यक्रम देखकर क्या प्रतिक्रिया व्यक्त करते हैं ? समस्या आज यह है कि हमें बच्चों का रोना पसंद नहीं है या फिर हम अपने बच्चों से इतना मोह करते हैं कि हम उनकी हर इच्छा पूरी करने में अपनी शान समझते हैं। परन्तु हमारा यही अविवेक उन बच्चों के भविष्य के प्रति खिलवाड़ है। जब बच्चा किसी फिल्मी गाने पर (जिसे वह समझता भी नहीं है) नृत्य करता है तो हमें अपने बालक की प्रतिभा पर गर्व होने लगता है, ऐसा लगने लगता है कि हमारे बालक में टी.वी. पर टेलेन्ट दिखाने लायक गुण आ गये हैं। हमारी महत्वकांक्षायें जाग जाती हैं। हमें असफलता जरा भी बर्दाश्त नहीं है। हम बच्चों की किसी भी असफलता पर उसे मनोवैज्ञानिक रूप से प्रताड़ित करने लगते हैं। जबकि सफलता और असफलता जीवन का स्परूप हैं।

हमारी यह प्रवृत्ति कहीं हमारे ही नवनिहालों के भविष्य के प्रति कोई बड़ा अवरोध उत्पन्न न कर दे। विचार कीजिये - हमारा आज का विवेक बच्चों के सुरक्षित भविष्य की नींव खड़ा कर सकता है।

- संपादक

हमारा शत्रु हमारे ही भीतर का विकार और प्रमाद है, बाहर कोई शत्रु नहीं

त्रैमासिक धार्मिक पत्रिका
चहकती चेतना
APRIL-JUNE 2014

क्यों धन संचय?

सम्राट चन्द्रगुप्त जब अपने गुरु भद्रबाहु स्वामी से दीक्षा लेने लगे, तब प्रजाजनों ने एकत्रित होकर कहा - सम्राट! आपकी अनुपस्थिति में इस संकट काल में प्रजा का क्या होगा ? सम्राट ने पुत्र की ओर संकेत करते हुये कहा - यह तुम्हारे सुख-दुख का साथी होगा । इतना कहकर राज्य का सारा धन गरीबों और जरुरतमंदों में वितरित कर दी । मन्त्री ने इशारा किया - महाराज ! इस राजकुमार को भी खर्च के लिये कुछ छोड़ दीजिये । सम्राट ने उत्तर दिया –

पुत्र कुपुत्र तो क्यों धन संचय? फिर धन कमा लेगा ।
पुत्र कुपुत्र तो क्यों धन संचय ?, क्षण में सभी मिटा देगा ।

सच्चा विराग

प्रद्युम्न कुमार ने अपनी रानी के पास पहुँचे और कहा – देवी ! हमें संसार, शरीर, भोगों से वैराग्य हो गया है । अब हम दिगम्बर मुनि धर्म ग्रहण करेंगे ।

रानी ने कहा – स्वामी ! आपको विराग हो गया होता तो आपको मेरे पास आने की क्या आवश्यकता थी ? किन्तु आपके विराग की बात आप ही जानें, पर मैं तो इस संसार से उदास हो गई हूँ और भगवान नेमिनाथ के समवशरण में दीक्षा लेने जा रही हूँ । इतना कहकर रानी एक मात्र सफेद साड़ी पहनकर समवशरण की ओर चल दी ।

बस यही काम की चीज है ....

एक बार महात्मा गांधी को एक समाज विरोधी व्यक्ति ने गांधीजी के बारे में तीन पेज पर बुरे शब्द और गालियाँ लिखकर भेजीं । गांधी ने अत्यंत शांत भाव से उन्हें पूरा पढ़ा और मुस्कराते हुये उसमें लगी आलपिन निकाल ली । साथ में बैठे हुये एक शिष्य ने पूछा – बापू ! आपको उस व्यक्ति ने इतने बुरे शब्दों में पत्र लिखा और उसका जबाब देने की बजाय मुस्करा रहे हैं और आपने इस आलपिन क्यों निकाल ली ? बापू ने शांत भाव से उत्तर दिया – मित्र ! इस पूरे पत्र में बस यही चीज काम की है ....

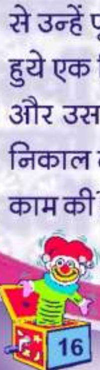

किसी को गाली मत दो क्योंकि वह खोटा सिक्का है, जिसको दोगे वही लौटा देगा।

त्रैमासिक धार्मिक पत्रिका
चहकती चेतना
APRIL-JUNE 2014

तीर्थंकरों की ऊँचाई ज्ञात करने का फार्मूला

हमारे प्रथम तीर्थंकर भगवान आदिनाथ की ऊँचाई 500 धनुष थी इसी क्रम में 50 के अंतर से आगे बढ़ते हैं अर्थात्

(2)	अजितनाथजी	- 450 धनुष
(3)	संभवनाथजी	- 400 धनुष
(4)	अभिनंदननाथजी	- 350 धनुष
(5)	सुमतिनाथजी	- 300 धनुष
(6)	पद्मप्रभजी	- 250 धनुष
(7)	सुपार्श्वनाथजी	- 200 धनुष
(8)	चन्द्रप्रभजी	- 150 धनुष
(9)	पुष्पदंतजी	- 100 धनुष

अब 10वें शीतलनाथजी के तीर्थंकर क्रमांक 10 को ध्यान में रखते हुये आगे बढ़ते हैं अर्थात्

(10)	शीतलनाथजी	- 90 धनुष
(11)	श्रेयासंनाथजी	- 80 धनुष
(12)	वासपूज्यजी	- 70 धनुष
(13)	विमलनाथजी	- 60 धनुष
(14)	अनंतनाथ	- 50 धनुष

इसी क्रम में 15वें धर्मनाथ तीर्थंकर के क्रम के एक अंक अर्थात् 5 को ध्यान में रखते हुये आगे बढ़ते हैं

(15)	धर्मनाथजी	- 45 धनुष
(16)	शांतिनाथजी	- 40 धनुष
(17)	कुन्थुनाथजी	- 35 धनुष
(18)	अरनाथजी	- 30 धनुष
(19)	मल्लिनाथजी	- 25 धनुष
(20)	मुनिसुव्रतजी	- 20 धनुष
(21)	नमिनाथजी	- 15 धनुष
(22)	नेमिनाथजी	- 10 धनुष

आगे हम जानते ही हैं कि 23वें भगवान पार्श्वनाथ तीर्थंकर की ऊँचाई - 9 हाथ और 24 वें तीर्थंकर भगवान महावीर की ऊँचाई 7 हाथ है।

है ना मित्रो ! कितना आसान हमारे तीर्थंकरों की ऊँचाई पता करना।

हमेशा प्रसन्न रहना सबसे प्रभावकारी और सस्ती दवा है।

अपशकुन

चलो जल्दी करो, लेट हो गये हैं। ट्रेन निकल जायेगी ..... मति अपने भाई को जोर से डांटते हुये बोली।

दीदी! मैं तो तैयार हूँ, आटोरिक्शा वाला भाई भी आ गया है। आप ही लेट कर रही हो – समय ने अपनी सफाई देते हुये कहा।

हाँ हाँ पता है, सब गल्ती मेरी ही है। तुम्हारे लिये ही नाश्ता पैक कर रही थी। चलो !मैं तो बाहर आ गई।

हाँ हाँ चलो। मति सूटकेस बाहर लाते हुये बोली।

बाहर आटो वाला भी हार्न बजाकर जल्दी चलने के लिये कह रहा था। मति और समय आटो में बैठ गये और जैसे ही आटो आगे बढ़ा, थोड़ा आगे जाने पर मति ने तेज स्वर में कहा – आटो रोको।

क्या हुआ मेडम ? कुछ सामान भूल गई हैं क्या ? आटो वाले ने रुकते हुये पूछा।

नहीं भैया !आपने देखा नहीं सामने से एक बिल्ली ने रास्ता काटा .....

तो क्या हुआ ? ऐसे तो बिल्ली रोज ही मेरी आटो के सामने से निकलती है। यदि बार-बार आटो रोकता रहूँगा तो मैं तो भूखा ही मर जाऊँगा।

अरे भैया! आप नहीं समझते शास्त्रों में लिखा है कि बिल्ली के रास्ता काटने से अपशकुन होता है, कोई बुरी घटना हो सकती है।

देखो मेडम ! आप पढ़ी लिखी समझदार होकर भी ऐसी बातें कर रहीं हैं और मुझे बताईये कौन से शास्त्र में ऐसा लिखा है...आटो वाले ने पंडितों की शैली में कहा।

वो मैं कुछ नहीं जानती बस आप दो मिनिट रुकिये फिर चलेंगे।

लेकिन दीदी .. तू चुप रह समय। मैं जो कह दिया सो कह दिया।

मति की जिद देखकर आटो वाला भी रुक गया। तब सामने ट्रेफिक जाम हो गया और बड़ी मुश्किल से आटो बाहर निकल पाया।

ट्रेन का समय भी हो रहा था। जैसे-तैसे वे रेल्वे स्टेशन पहुँचे और आटो वाले को किराया देकर मति और समय भागते - भागते प्लेटफार्म पर पहुँचे तो उन्हें उनकी ट्रेन जाती हुई दिखाई दे रही थी। लेकिन अब क्या कर सकते थे .. वापस दोनों अपने घर आ गये। रास्ते में दोनों चुपचाप रहे। घर पर आकर समय ने मति के पास आकर कहा - दीदी! कोई बात नहीं, ये तो चलता ही रहता है। मुझे दु:ख इस बात का नहीं है कि हमारी ट्रेन छूट गई, दु:ख इस बात का है कि आपने कैसी उल्टी मान्यता मान रखी है। अब मुझे बताईये बिल्ली के रास्ता काटने के बाद रुकने पर अपशकुन हुआ या नहीं ? ये सब बेकार की बातें हैं। कोई अपनी दुकान में नींबू-मिर्च लगाता है, कोई दुकान में धुंआ करता है, कांच के फूट जाने पर, छींक आने पर, कौए के बोलने पर अच्छा-बुरा मानते हैं। ये तो मिथ्यात्व है और महापाप है। हमने तो पाठशाला में यही पढ़ा है।

लेकिन समय! दुनिया में तो अनेक लोग ऐसा करते हैं - दीदी ने स्पष्टीकरण देते हुये कहा।

समय ने समझदारी से कहा - दीदी! यदि 100 लोग मिलकर कोई गलत कार्य करें तो वह कार्य सही नहीं हो जाता। किसी का भला-बुरा होना तो उसके पुण्य-पाप के उदय के अनुसार होता है और ये खोटी मान्यतायें तो हमारे भारत में अधिक हैं, कई देशों में तो ऐसी मान्यतायें हैं ही नहीं हैं और कई देशों में तो बिल्ली का रास्ता काटना, छींक आना शुभ माना जाता है। हमें इन सब बातों में अपना उपयोग बर्बाद नहीं करना चाहिये।

बात तो तुम सही कह रहे हो। यदि आज मैंने आटो नहीं रुकवाया होता तो हमारी ट्रेन नहीं छूटती। दीदी ने शांत स्वर से कहा। तुमने ये सब बातें पाठशाला में सीखीं हैं ना।

हाँ दीदी! यह सब हमारी पाठशाला का कमाल है। अनंत तीर्थंकरों और दिगम्बर मुनिराजों ने अपने निर्मल ज्ञान से वस्तु स्वरूप का जो वर्णन किया वही हमें वहाँ बताया जाता है।

तब तो मैं भी अब पाठशाला चलूँगी। मति ने उत्साहित होकर कहा।

वाह दीदी ! अच्छा हुआ जो हमारी ट्रेन छूट गई, आपकी ट्रेन तो पटरी पर आ गई। समय की बात का अर्थ समझकर मति ने मुस्कराते हुये अपने छोटे भाई को गले से लगा लिया।

त्रैमासिक धार्मिक पत्रिका
चहकती चेतना
APRIL-JUNE 2014

प्रश्न -1. तीर्थंकरों की जन्म स्थली अयोध्या को अनादि निधन बतलाया है, सो कैसे.?

उत्तर - अयोध्या नगरी का स्थान अनादि निधन है परन्तु वहाँ बनाये गये मकान आदि रचनायें सब नाशवान हैं। सदा काल तीर्थंकरों का जन्म अयोध्या में ही होता है।

प्रश्न -2. जम्बू स्वामी के बाद कोई मोक्ष गया है या नहीं ?

उत्तर - जम्बू स्वामी अंतिम केवली थे, उनके बाद कोई मोक्ष नहीं गया।

प्रश्न -3. वीतरागी भगवान के छत्र, चंवर आदि क्यों हैं, ये तो वैभव प्रदर्शन की वस्तुयें हैं ?

उत्तर - इन्द्र इन वस्तुओं को अपनी भक्ति से बनाते हैं, अरहंत को इन वस्तुओं की आवश्यकता नहीं होती।

प्रश्न -4. अण्डा कितने इन्द्रिय जीव है ?

उत्तर - अण्डा पंचेन्द्रिय जीव है क्योंकि उसमें से पंचेन्द्रिय जीव ही पैदा होता है।

प्रश्न -5. क्या रावण स्वभाव से ही राक्षस था ?

उत्तर - रावण स्वभाव से राक्षस नहीं था, उसका वंश का नाम राक्षस था। राक्षस का अर्थ है - रक्षा करने वाला।

प्रश्न -6. रात्रि में फलाहार करने में दोष है या नहीं ?

उत्तर - रात्रि में फलाहार करना भी रात्रि भोजन है किन्तु उसमें अन्नाहार की अपेक्षा दोष कम है।

प्रश्न -7. बरसते हुआ जल छना होता है क्या ?

उत्तर - हाँ। उसका उपयोग 48 मिनिट तक कर सकते हैं।

प्रश्न -8. बहुबीज अभक्ष्य किसे कहते हैं ?

उत्तर - जिस फल में बीजों के बीच में दल न हो और वे इकट्ठे हों वे ही बहुबीजा हैं।

प्रश्न -9. क्या आर्यिकाजी समाधिमरण के समय सम्पूर्ण वस्त्रों का त्याग कर सकती हैं ?

उत्तर - नहीं। आर्यिकाजी समधिमरण के समय भी सम्पूर्ण वस्त्रों का त्याग नहीं कर सकती हैं, यदि वे वस्त्रों का त्याग भी कर दें तो भी लज्जा सम्बन्धी भय रहता ही है। वे पुरुष की तरह निर्भय नहीं हो सकती हैं।

प्रश्न -10. पट्ट शिष्य का क्या अर्थ है ?

उत्तर - आचार्य महाराज ने अपना आचार्य पद जिस शिष्य को दिया हो वह पट्ट शिष्य कहलाता है।

जितनी बार सांस लेते हो, उससे अधिक बार देव-शास्त्र-गुरु का चिन्तन करो

शील की रक्षा

कानपुर के पास किसोरा नाम का एक हिन्दू राज्य था। उसके राजा का नाम सज्जन सिंह था। उनके लक्ष्मण सिंह नाम का पुत्र एवं ताजकुंवरि नाम की पुत्री थी। उस समय दिल्ली का बादशाह कुतुबुद्दीन ऐबक था। राज्य में मुसलमान सैनिकों का आंतक था। वे बिना कारण से हिन्दुओं पर आक्रमण कर देते थे। एक दिन लक्ष्मण सिंह और राजकुमारी ताजकुंवरि शिकार करने जंगल गये, वहाँ पर कुछ मुगल सैनिक छिपकर बैठे हुये थे। जैसे ही उन्होंने लक्ष्मण सिंह और ताजकुंवरि को जंगल में घूमता देखा तो उन पर आक्रमण कर दिया। लक्ष्मण सिंह और ताजकुंवरि बहादुरी से मुकाबला करते हुये ने 10 मुगल सैनिकों को मार डाला। शेष बचे सैनिक भागकर दिल्ली पहुँचे और बादशाह को भड़का दिया कि राजकुमारी ताजकुंवरि बहुत सुन्दर है, वह तो आपकी बेगम बनने के योग्य है।

बादशाह ने सैनिकों की बात मानकर किसोरा राज्य पर आक्रमण कर दिया। राजपूत सैनिकों ने बहादुरी से मुगल सेना का सामना किया फिर भी बादशाह की विशाल सेना के सामने किसोरा की सेना घटती जा रही थी। यह संकट देखकर लक्ष्मण सिंह और राजकुमारी ताजकुंवरि सैनिक के वेश में युद्ध के लिये निकल पड़े। बादशाह को गुप्तचर से समाचार मिला कि स्वयं राजकुमारी सैनिक के वेश में युद्ध लड़ रही है। उसने सैनिकों के सामने घोषणा की कि जो सैनिक राजकुमारी को जीवित पकड़कर लायेगा उसे मुंहमांगा इनाम दिया जायेगा। यह सुनकर अनेक मुगल सैनिक राजपूतों पर टूट पड़े। अनेक राजपूत सैनिक मारे गये।

अपनी बहन के इज्जत संकट में देखकर लक्ष्मण सिंह की आंखों में आंसू आ गये और कहा - बहन ! तुम्हारी इज्जत बचाने का अब मेरे पास कोई उपाय नहीं है। बहन ने जोश से कहा - राजपूत होकर रोते हो भैया। अरे ! मेरा शरीर तो कभी न कभी तो मरेगा ही, तुम मेरे शील धर्म को बचाओ। किसी पर पुरुष के हाथ तुम्हारी बहन के शरीर को स्पर्श भी नहीं करना चाहिये। लक्ष्मण सिंह अपनी वीर बहन का संकेत समझ गया, उसने तलवार के एक ही वार से अपनी बहन का सिर शरीर से अलग कर दिया और मुगल सैनिकों पर दुगुने जोश से हमला करने लगा। अनेकों मुगल सैनिकों को मारकर वह वीर लक्ष्मण सिंह मारा गया।

इस युद्ध में जीत तो कुतुबुद्दीन ऐबक की हुई परन्तु ताजकुंवरि की गाथा के सामने उसकी जीत हार के समान लग रही थी जिसने अपना शील बचाने के लिये अपने प्राणों की आहुति दे दी। धन्य हैं ऐसी वीरांगना।

- 'वीर बालिकायें' से साभार

न्याय से कमाना पाप है और अन्याय से कमाना महापाप।

त्रैमासिक धार्मिक पत्रिका
चहकती चेतना
APRIL-JUNE 2014

कैसे पहुँचूं

राजा को जिनमंदिर का रास्ता बताओ

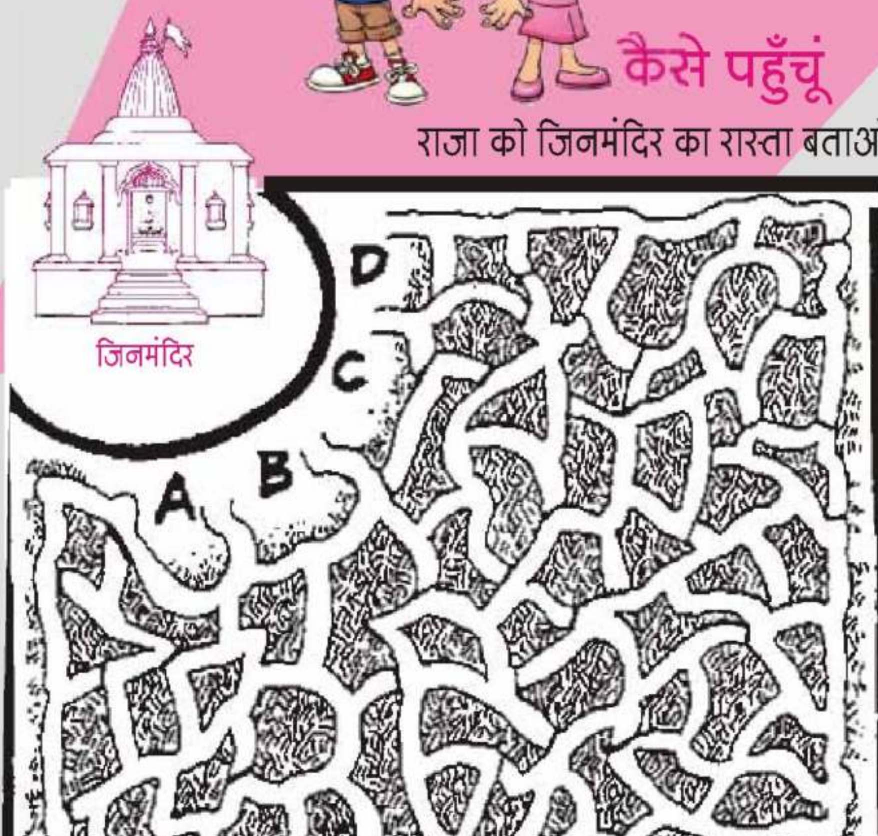

जो अपने आत्म हित की बात नहीं सुनता वह बहरा है।

काश ! उन्हें क्षमा कर दिया होता

कर्नाटक का एक प्रसिद्ध जैन परिवार है वीरेन्द्र हेगड़े का परिवार। इसी हेगड़े परिवार ने गोम्टेश्वर के पास धर्मस्थल का निर्माण कराया और भगवान बाहुबली की 37 फुट उंची प्रतिमा को विराजमान किया है। कर्नाटक का एक और हेगड़े परिवार है। इस परिवार का राजनीति में काफी प्रभाव रहा है। जनता पार्टी के नेता के.के. हेगड़े और रामकृष्ण हेगड़े इसी परिवार के सदस्य रहे हैं। एक बार उनसे पूछा गया कि वीरेन्द्र हेगड़े जैन हैं और आप हिन्दु। एक ही जाति होने पर धर्म अलग - अलग क्यों हैं ? उन्होंने उत्तर दिया - लगभग 125 वर्ष पूर्व हमारा परिवार भी जैन परिवार था। एक बार हमारे परिवार के किसी सदस्य ने शिकार किया जिससे जैन समाज ने हमारे परिवार को समाज से बाहर निकाल दिया। हमारा परिवार काफी प्रभावशाली परिवार था, हमारे परिवार के साथ 10 हजार अन्य व्यक्तियों ने भी जैन धर्म त्यागकर हिन्दु धर्म ग्रहण कर लिया। किन्तु वर्ष में एक बार हम सब भी जैन मंदिर जाते हैं, सात्विक भोजन करते हैं, जैन परम्परा का पालन करते हैं। यह दिन हमें याद दिलाता है कि हम सब भी कभी जैन थे।

मित्रो ! सोचिये यदि उस समय के लोगों ने विशाल हृदय और दूर दृष्टि से कार्य किया होता तो हमारे ही भाई हमसे अलग नहीं होते। वे शिकार करने वाले व्यक्ति को कोई दण्ड देकर प्रायश्चित्त दिला सकते थे, लेकिन ऐसा नहीं हुआ। इतिहास की एक छोटी सी भूल ने एक अलग सम्प्रदाय खड़ा कर दिया।

संस्था की योजनाओं में आपका आर्थिक सहयोग सादर आमंत्रित है।

शिरोमणि परम संरक्षक	–	1 लाख रूपये
परम संरक्षक	–	51 हजार रूपये
सरंक्षक	–	31 हजार रूपये
परम सहायक	–	21 हजार रूपये
सहायक	–	11 हजार रूपये
सहायक सदस्य	–	5 हजार रूपये
सदस्य	–	1000/–

प्रत्येक सहयोगी को (सदस्य को छोड़कर) चहकती चेतना पत्रिका का आजीवन सदस्य बनाया जायेगा। संस्था द्वारा तैयार होने वाली समस्त सी.डी. और प्रकाशन आपको निःशुल्क भेजा जायेगा। आप अपनी सहयोग राशि आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाउन्डेशन रजि. जबलपुर के नाम से चैक अथवा ड्राफ्ट के माध्यम से बनाकर भेजें। आप सहयोग राशि हमारी संस्था के पंजाब नेशनल बैंक, फुहारा चौक, जबलपुर के बचत खाता कमांक 1937000101026079 में जमा करा सकते हैं !

IFS CODE : PUBN0193700

छतरी को उठाये रखने का कोई मतलब नहीं है।

त्रैमासिक धार्मिक पत्रिका
चहकती चेतना
APRIL-JUNE 2014

तोते ने किया कमाल

सर्वज्ञ जिनेन्द्र की वाणी में आया कि सभी गतियों के संज्ञी पंचेन्द्रिय जीव आत्मज्ञान कर सकते हैं। तिर्यन्च गति के पक्षियों, जानवरों में भी सम्यग्दर्शन पाने की योग्यता है। भले ही वे हमारी भाषा में बात नहीं करते न ही हमारे जैसा जीवन जीते हैं परन्तु उनका मन हमारी ही तरह कार्य करता है। भारत की प्रसिद्ध नगरी आगरा में बल्केश्व र परिवार निवास करता है। दिनांक 20 फरवरी 2014 को इस परिवार की एक महिला नीलम की किसी ने हत्या कर दी। नीलम की हत्या से पूरे परिवार के सदस्य बहुत दुःखी थे। इस घर में एक तोता और एक कुत्ता भी था। हत्या करने वाले ने कुत्ते को पहले ही मार डाला। तोता नीलम का लाडला था, उन्हीं के हाथ से खाता-पीता था। हत्या के समय तोते का पिंजरा उसी कमरे में था जिस कमरे में नीलम की हत्या की गई थी। तोते ने अपनी मालकिन की हत्या से दुःखी होकर भोजन-पानी, बोलना सब छोड़ दिया। हत्यारा नीलम के परिवार से सम्बन्ध रखता था। नीलम के पति का दोस्त आशुतोष जब भी घर पर किसी काम से आता तो तोता पिंजरे में फड़फड़ाने लगता। परिवार के सदस्य तोते यह व्यवहार देखकर आश्चर्यचकित थे। पुलिस वाले भी हत्या में परिवार के करीबी सदस्य होने आशंका व्यक्त कर रहे थे। 25 फरवरी को तोते के सामने जब पुलिस वाले ने परिवार के और करीबी सदस्यों के नाम लेना प्रारंभ किये तो आशुतोष नाम आते ही तोता चिल्लाने लगा - आशु... आशु... आशु... हत्या.. हत्या... हत्या...। यह सुनकर सब आश्चर्यचकित हो गये। आशुतोष बल्केश्वर परिवार के मित्र था और उस पर किसी को सन्देह नहीं था। जब पुलिस ने आशुतोष को पकड़कर उससे पूछताछ की तो उसने अपना अपराध स्वीकार कर लिया। तोते की समझदारी से एक अपराधी को पकड़ लिया गया।

हमारी जिनवाणी में ऐसी अनेक सत्य कहानियाँ मिलती हैं। जैसे-मेंढक की जिनेन्द्र भक्ति, हाथी को वैराग्य, शेर को सम्यग्दर्शन, कुत्ते का णमोकार मंत्र सुनना, सियार द्वारा बैर भाव आदि। जब इन जानवरों और पक्षियों को इतनी समझदारी है तो हमें तो धर्म करना और आत्मअनुभव सुलभ ही है। अपना जीवन धर्म के साथ व्यतीत हो, हमारे जीवन का यही उद्देश्य होना चाहिये।

- कहानी - साभार दैनिक समाचार पत्र, जयपुर

न्याय से कमाना पाप है और अन्याय से कमाना महापाप।

आश्चर्य किन्तु सत्य

जिनागम में वर्णित वस्तु व्यवस्था के अनुसार पहले के मनुष्य, पशु आदि सभी जीवों की ऊँचाई अधिक और आकार विशाल होता था। उनके शरीर की ऊँचाई 6000 धनुष अधिकतम होती थी। एक धनुष अर्थात् चार हाथ, एक हाथ अर्थात् 4 फुट। इस तरह एक धनुष का मतलब हुआ 24 फुट।

विश्व में होने वाले अनेक अनुसंधानों एवं खोजों से स्पष्ट हो गया है कि पहले के लोगों की ऊँचाई और आयु अधिक होती थी।

1. द्वारिका के समुद्रतल के अन्दर खोज करने वाले राष्ट्रीय समुद्र विज्ञान संस्थान के समुद्र पुरातत्व विभाग के द्वारा किये गये शोध के अनुसार समुद्र में डूबे मकानों की ऊँचाई 600 मीटर है। इनके कमरों के दरवाजे 70 फुट ऊँचे हैं तो इनमें रहने वाले व्यक्ति लगभग 60 फुट के होंगे ही। जिनागम के अनुसार भगवान नेमिनाथ की ऊँचाई लगभग 60 फुट ही थी।
2. वर्तमान में विज्ञान के अनुसार 30 से 50 फुट का डायनासोर होता था, यह आज से कई करोड़ वर्ष पूर्व छिपकली का ही रूप है।
3. मास्को में 1993 एक ग्लेशियर (बर्फ का पहाड़) खिसका था। उसके अन्दर एक नरकंकाल मिला जो 23 फुट लम्बा था। वैज्ञानिक इसे 2 से 4 लाख वर्ष पूर्व का मानते हैं। यह नरकंकाल मास्को के म्यूजियम में आज भी रखा हुआ है।
4. बड़ौदा गुजरात के म्यूजियम में कई लाख वर्ष पूर्व का छिपकली का अस्थिपंजर रखा है जो कि 10-12 फुट लम्बा है।
5. तिब्बत की गुफाओं में कई लाख वर्ष पूर्व के जूते मिले हैं, जिनकी लम्बाई 10 फुट है।
6. इतिहास के अनुसार मोहन जोदड़ो हड़प्पा की खुदाई से यह स्पष्ट हो गया है कि मानवों के अस्थिपंजर के आधार से पहले मनुष्यों की आयु अधिक और लम्बाई भी अधिक होती थी।
7. फ्लोरिडा में एक दस लाख वर्ष पुराना बिल्ली का शरीर की हड्डियों मिलीं जिसके अनुसार उस बिल्ली के दांत 7 इंच लम्बे हैं।
8. अमेरिका में सैकड़ों वर्ष पूर्व का काकरोच का ढांचा मिला है ये काकरोच चूहों से भी बड़े होते थे।
9. प्रसिद्ध शहर रोम के पास कैसल दी गुड्डो में भी सैकड़ों वर्ष पुरानी हाथियों की हड्डियाँ मिलीं हैं इनमें से कुछ हाथी के दांत 10 फुट लम्बाई के हैं।
10. कुछ समय पूर्व ही यूरोप के पुरातत्वविदों ने सबसे बड़ा मांसाहारी डायनासोर खोज निकालने का दावा किया है। पुर्तगाल में खोजे गये इस डायनासोर का नाम टॉरवोसोरस गुर्नेई रखा गया है। इस डायनासोर की खोपड़ी 4 फुट लम्बी, 33 फुट लम्बा आकार और वजन लगभग 1000 किलो था।

प्राप्त अवशेषों एवं वैज्ञानिकों के अनुसंधान के आधार पर सिद्ध होता है कि आज सैकड़ों वर्ष पूर्व जानवर, पक्षी, मनुष्य, मकान आदि समस्त जीव एवं वस्तुयें विशाल आकार की होती थीं। यही हमारी बात हमारे जैन ग्रन्थ कहते हैं। परन्तु यह हमारा दुर्भाग्य है कि हमें यह बात सिद्ध करने के लिये विज्ञान का सहारा लेना पड़ता है। लेकिन जो भी केवली परमात्मा की वाणी और वीतरागी मुनिराजों द्वारा लिखित जिनवाणी में आया है वह अक्षर-अक्षर सत्य और प्रामाणिक है।

पैर में मोच और छोटी सोच इंसान को कभी आगे बढ़ने नहीं देती।

समाचार कोना

वेदी प्रतिष्ठा संपन्न

जबलपुर से 30 किमी दूरी पर स्थित शहपुरा में दिनांक 29 जनवरी से 31 जनवरी 2014 तक नव निर्मित जिनमंदिर में वेदी प्रतिष्ठा महोत्सव संपन्न हुआ। इस अवसर पर पण्डित अभयकुमारजी देवलाली, पण्डित राजेन्द्र कुमारजी जबलपुर, श्री गांगजीभाई मोता भुज, पण्डित मनोजजी जैन, पण्डित श्रेणिकजी जबलपुर के प्रवचनों का लाभ मिला। श्री महावीर कुन्दकुन्द-कहान दिगम्बर जैन स्वाध्याय मंदिर ट्रस्ट, शहपुरा द्वारा निर्मित जिनमंदिर में मूल नायक भगवान महावीर स्वामी की प्रतिमा सहित 10 भगवन्तों को वेदी पर विधि-पूर्वक विराजमान किया गया। सम्पूर्ण विधि विधान बाल ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री, दिल्ली के द्वारा संपन्न हुये। सम्पूर्ण कार्यक्रम में श्रीमद् राजचन्द्र आश्रम कुकुमा भुज के सदस्यों का अभूतपूर्व सहयोग प्राप्त हुआ। सम्पूर्ण कार्यक्रम श्री विराग शास्त्री, जबलपुर के निर्देशन में संपन्न हुआ।

वैवाहिक पत्रिका "मुमुक्षु मंडप" का प्रकाशन

दिगम्बर जैन समाज के स्वाध्याय रुचिवन्त एवं संस्कारित परिवारों के विवाह सम्बन्ध सरल करने के उद्देश्य से सर्वोदय ज्ञानपीठ, जबलपुर द्वारा विवाह योग्य युवक-युवतियों का परिचय हेतु मुमुक्षु मंडप-2014 का प्रकाशन किया गया है। इस पत्रिका के माध्यम से आप अपने परिवार के सुयोग्य पुत्र-पुत्रियों हेतु योग्य सम्बन्ध देख सकते हैं। मुमुक्षु मंडप पत्रिका प्राप्त करने के लिये आप सर्वोदय, 702, जैन टेलीकॉम, फूटाताल, जबलपुर 482002 म.प्र. पर पत्र भेज सकते हैं अथवा आप अपना पता 9300642434 पर या हमारे ई - मेल **mumukshumandap@gmail.com** पर भेज सकते हैं। इस पत्रिका शुल्क मात्र 150/- निर्धारित किया गया है। आप यह राशि सर्वोदय ज्ञानपीठ, जबलपुर के नाम से पंजाब नेशनल बैंक, शाखा - फव्वारा चौक, जबलपुर के बचत खाता क्रमांक **1937000100075883** **IFS CODE NO. PUNB193700** में जमा कराके हमें सूचित करें अथवा मनीआर्डर चैक/ड्राफ्ट द्वारा भेजें।

ग्रीष्मकालीन आगामी बाल शिविर

ग्रीष्मकालीन समय में प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी पूरे देश के विभिन्न स्थानों पर बाल शिविर आयोजित किये जायेंगे। इनमें कुछ बाल शिविर की जानकारी हमें प्राप्त हुई है। बालक-बालिकायें अपनी सुविधानुसार इन स्थानों पर जाकर जिनवाणी के सिद्धान्तों एवं संस्कारों का अवश्य लाभ लें -

1. दिनांक 20 से 27 अप्रेल 2014 - देवलाली नासिक - श्री वीनूभाई 9820494461
2. दिनांक 6 से 13 मई 2014 - जबलपुर संजय जैन - 9303828770
3. दिनांक 18 से 3 जून 2014 - शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर, विश्वास नगर, दिल्ली - 9582883020
4. दिनांक 25 से 1 जून 2014 - हिंगोली महा. पण्डित अमोल सिंघई - 9860914592
5. दिनांक 1 से 9 जून 2014 - पिड़ावा राज. पण्डित धनसिंग जैन - 8107408100
6. दिनांक 5 से 14 जून 2014 - 101 सामूहिक बाल संस्कार शिविर मध्यप्रदेश एवं उत्तरप्रदेश के 101 स्थानों पर मुख्य कार्यालय - भिण्ड - डॉ. सुरेश जैन - 9826646644
7. दिनांक 14 से 19 जून 214 - बीना म.प्र. पण्डित अमित शास्त्री - 9584930156

दांत गिर जाते हैं क्योंकि वे कड़े बहुत हैं, जीभ नहीं गिरती क्योंकि वह नरम है।

स्वर्णपुरी में सोनगढ़ में आध्यात्मिक विद्वत् गोष्ठी संपन्न

श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट मुम्बई द्वारा तीर्थधाम सोनगढ़ में आध्यात्मिक विद्वत् संगोष्ठी का आयोजन किया गया। दिनांक 7 फरवरी से 11 फरवरी 2014 तक आयोजित इस संगोष्ठी में देश के उच्च कोटि के विद्वानों के साथ लगभग 150 प्रवचनकार विद्वानों ने सहभागिता की। संगोष्ठी में आध्यात्मिक सत्पुरुष गुरूदेवश्री कानजी स्वामी के अनेकान्त के बोलों के प्रवचन के आधार से एवं क्रमबद्धपर्याय, दृष्टि का विषय पर विभिन्न विद्वानों द्वारा गंभीर एवं विशद चर्चा हुई। श्री कुन्दकुन्द - कहान विद्यार्थी गृह सोनगढ़ में आयोजित इस संगोष्ठी में देश में मुमुक्षु समाज द्वारा संचालित 11 विद्यालयों के प्रतिनिधि छात्र एवं संचालक पधारे एवं विद्यालयीन गतिविधियों का उत्कृष्ट बनाने के लिये सुझावों का परस्पर आदान-प्रदान हुआ। तत्वप्रचार में सदा समर्पित श्रेष्ठी श्री अनंतराय ए. सेठ मुम्बई की पवित्र भावना के फलस्वरूप सोनगढ़ में प्रथम बार आयोजित यह कार्यक्रम अनेक नई योजनाओं और नये संकल्प के साथ सानंद संपन्न हुआ। संगोष्ठी का संचालन पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, डॉ. राकेश जैन नागपुर, पण्डित रजनीभाई दोशी हिम्मतनगर ने किया तथा गोष्ठी संपूर्ण संयोजन विराग शास्त्री जबलपुर द्वारा किया गया। इस संगोष्ठी की वीडियो सी.डी. प्राप्त करने के लिये आप आयोजक संस्था के मुम्बई कार्यालय से 022-26130820 या ई-मेल नम्बर info@vitragvani.com पर संपर्क कर सकते हैं।

जबलपुर में वेदी प्रतिष्ठा संपन्न

जबलपुर के बड़ा फुहारा स्थित श्री महावीर स्वामी दिगम्बर जिनमंदिर में दिनांक 20 दिसम्बर को वेदी प्रतिष्ठा महोत्सव सम्पूर्ण विधि विधान के साथ संपन्न हुआ। इस अवसर पर अष्टधातु की तीन प्रतिमाओं को वेदी पर विराजमान किया गया। प्रतिमा स्थापना का पवित्र कार्य श्री निर्मलकुमार जितेन्द्रकुमार जैन, श्री सुनील कुमार नेमीचंद जैन पायलवाला एवं वीतराग विज्ञान मंडल के सदस्यों द्वारा संपन्न हुआ। इस अवसर पर पण्डित अभयकुमारजी देवलाली, पण्डित राजेन्द्र कुमार जैन के उद्‌बोधन का लाभ मिला।

- विराग शास्त्री, जबलपुर

यदि आप गुस्से के एक क्षण में धैर्य रखते हैं तो आप दुःख के सौ दिन से बच सकते हैं।

आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाउन्डेशन, जबलपुर को आगामी योजनाओं में एवं दान स्वरूप निम्न साधर्मियों की सहयोग राशि प्राप्त हुई। संस्था सभी सहयोगियों का हार्दिक ज्ञापित करती है।

* श्रीमति आरती पुष्पराज जैन, मुम्बई
* श्री नितिन जैन, नांगलराया, दिल्ली
* श्री रोमेश जैन, बिलासपुर
* श्रीमति अर्चना अरुण जैन, चेन्नई
* श्रीमति हंसा विजय पामेचा, जबलपुर
* श्री विनोद कुमार वीरबाला जैन, अलीगंज
* डॉ. मुकेश रजनी जैन, अलीगंज एटा उ.प्र.
* परी अनुभूति जैन, रायपुर

मुमुक्षु समाज के स्तंभ श्री बालचन्द पाटनी का देह वियोग

आध्यात्मिक सत्पुरुष श्री कानजी स्वामी के अनन्य शिष्य एवं श्री कुन्दकुन्द-कहान दिगम्बर जैन स्वाध्याय मंदिर ट्रस्ट, कोलकाता के मुख्य स्थापनकर्ता श्री बालचंदजी पाटनी का 16 फरवरी 2014 को देह वियोग हुआ। चहकती चेतना परिवार तत्वरुचिवंत श्री बालचंदजी पाटनी के प्रति हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करता है और उनके शीघ्र भवनाश की कामना करता है। इस शोक प्रसंग पर उनके परिवार की ओर से संस्था को 1100/- रुपये की राशि प्राप्त हुई।

"विज्ञान वाटिका"

प्रश्न पुस्तिका प्राप्त करें

अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन, उस्मानपुर, दिल्ली द्वारा पिछले वर्षों की तरह इस वर्ष भी विज्ञान वाटिका प्रश्न पत्रिका का प्रकाशन किया गया है। यह पत्रिका सम्पूर्ण देश में लोकप्रिय है। पण्डित ऋषभ शास्त्री, दिल्ली के निर्देशन में तैयार इस पत्रिका में 30 अध्यायों में जिनागम में वर्णित विषय के आधार से प्रश्न दिये गये हैं। आपको जिनवाणी से खोजकर इनका उत्तर देना है। विज्ञान वाटिका के माध्यम से अनेक ग्रन्थों के स्वाध्याय करने का महान सौभाग्य मिलता है। यह पत्रिका सम्पूर्ण जैन समाज द्वारा मुक्त कंठ से सराही गई है। श्री विराग शास्त्री को इस पत्रिका का क्षेत्रीय प्रभारी नियुक्त किया गया है। विज्ञान वाटिका को प्राप्त करने के इच्छुक साधर्मी उनसे **9300642434** पर संपर्क कर सकते हैं। इस पत्रिका का मूल्य **50 रु.** निर्धारित किया गया है।

त्रैमासिक धार्मिक पत्रिका
चहकती चेतना
APRIL-JUNE 2014

मुनिराजों के अट्ठाईस मूलगुण

दिगम्बर मुनिराज अन्तरंग में अपनी आत्मा का अनुभव करते हैं और बहिरंग में 28 मूलगुणों का निर्दोष पालन करते हैं। इनके बिना मुनिपना निर्दोष नहीं होता। इसलिये मुनिराजों को चलते-फिरते सिद्ध कहा जाता है। आईये जानें इन अट्ठाईस मूलगुणों को -

5 महाव्रत, 5 समिति, 5 इन्द्रिय विजय, 6 आवश्यक, 7 शेषगुण

5 महाव्रत – हिंसादि पाँच पापों को मन-वचन-काय व कृत-कारित-अनुमोदना से त्याग करना महापुरुषों का महाव्रत है।

1. अहिंसा महाव्रत - छ: काय के जीवों का हिंसा का पूर्णरूप से त्याग करना।
2. सत्य महाव्रत - सभी प्रकार के झूठ बोलने का पूर्णरूप से त्याग कर देना।
3. अचार्य महाव्रत - वस्तु के स्वामी की आज्ञा के बिना वस्तु को ग्रहण नहीं करना।
4. ब्रह्मचर्य महाव्रत - स्त्री सेवन और भोग सम्बन्धी सम्बन्धी भावों का सर्वथा त्याग।
5. अपरिग्रह महाव्रत - अंतरंग और बहिरंग 24 परिग्रहों का पूर्ण रूप से त्याग एवं संयम-शौच एवं ज्ञान के उपकरणों पिछी-कमण्डल एवं शास्त्र में भी ममता परिणाम नहीं रखना।

5 समिति – सम्यक् गति अर्थात् प्रवृत्ति को समिति कहते हैं। चलने, बोलने, आहार आदि समस्त क्रियाओं में जीवों की रक्षा करना समिति है।

6. ईर्या समिति - प्रासुक मार्ग में चार हाथ प्रमाण भूमि देखकर चलना एवं भूमि पर चलने वाले जीवों की रक्षा करना ईर्या समिति है।
7. भाषा समिति - निंदा आदि वचनों को त्याग कर हित-मित-प्रिय वचन बोलना भाषा समिति है।
8. एषणा समिति - 46 दोष और 32 अंतराय टालकर उच्चकुल वाले सदाचारी श्रावक के विधिपूर्वक निर्दोष आहार ग्रहण करना एषणा समिति है।
9. आदाननिक्षेपण समिति- शास्त्र, कमण्डलु, पिछी आदि उपकरणों को देखकर रखना, उठाना आदाननिक्षेपण समिति है।
10. उत्सर्ग समिति - जीव रहित स्थान पर मल-मूत्र आदि का त्याग करना उत्सर्ग समिति है।

जो अपने मुख से धर्म चर्चा नहीं करता वो गूंगा है।

5 इन्द्रिय विजय –

11. स्पर्शन इन्द्रिय विजय – स्पर्श सम्बन्धी समस्त विषयों में राग -द्वेष नहीं करना।
12. रसना इन्द्रिय विजय – खट्टा-मीठा आदि रसना सम्बन्धी समस्त विषयों में राग -द्वेष नहीं करना।
13. घ्राण इन्द्रिय विजय – सुगन्ध-दुर्गन्ध आदि नासिका सम्बन्धी समस्त विषयों में राग -द्वेष नहीं करना।
14. चक्षु इन्द्रिय विजय – काला-पीला आदि चक्षु सम्बन्धी समस्त विषयों में राग -द्वेष नहीं करना।
15. कर्ण इन्द्रिय विजय – मधुर गान- गाली आदि श्रवण सम्बन्धी समस्त विषयों में राग -द्वेष नहीं करना।

6 आवश्यक – अवश्य करने कार्य आवश्यक कहलाते हैं।

16. समता – जीवन-मरण, राग-द्वेष त्याग करके समता भाव धारण करना।
17. स्तुति – 24 तीर्थंकरों के गुणों का स्तवन।
18. वंदना – 24 तीर्थंकरों में से किसी एक की एवं पंचपरमेष्ठियों में से किसी एक की मुख्य रूप से स्तुति करना वंदना है। यह वंदना दिन में तीन बार करते हैं।
19. प्रतिक्रमण – व्रतों में लगे हुये दोषों की आलोचना करना प्रतिक्रमण है।
20. प्रत्याख्यान – भविष्य में दोष न करने की प्रतिज्ञा करने का नाम प्रत्याख्यान है।
21. कायोत्सर्ग – शरीर से ममत्व का त्याग करना।

7 शेष गुण –

नग्नत्व – संपूर्ण प्रकार के वस्त्र-आभूषण त्यागकर बालक के समान नग्न मुद्रा धारण करना।

स्नान नहीं करना – धूल-पसीने आदि के कारण शरीर में अनेक सूक्ष्म जीव रहते हैं, इनका घात न हो इसलिये वे स्नान नहीं करते।

दन्त धावन नहीं करना – किसी भी प्रकार से दांत साफ नहीं करना।

केश लोंच – दो से चार माह के बीच उपवास के साथ अपने हाथों से सिर, दाढ़ी, मूंछ के बालों को उखाड़ना।

भूमिशयन – भूमि, शिला, लकड़ी के पाटे, सूखी घास या चटाई पर एक करवट सोना।

एक भुक्ति – चौबीस घंटे में एक बार नियत समय पर भोजन करना।

स्थिति भोजन – दीवार का सहारा लिये बिना खड़े होकर भोजन करना।

ऐसे 28 मूलगुणों के निर्दोष पालक दिगम्बर मुनिराजों के चरणों में सादर कोटि-कोटि नमन।

जो अपने आत्म हित की बात नहीं सुनता वह बहरा है।

क्षमा

प्रश्न यह नहीं कि आप क्या थे, बल्कि यह है कि आज आप क्या हैं ?

न्याय से कमाना पाप है और अन्याय से कमाना महापाप।

आध्यात्मिक सत्पुरुष

पूज्य गुरुदेवश्री

की 125वीं जन्म जयंती पर

कोटि-कोटि नमन

तीर्थधाम सोनगढ़ में सम्पन्न आध्यात्मिक विद्वत् संगोष्ठी – 2014

की झलकियाँ